

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय “समकालीन स्त्री विमर्श के आलोक में जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में प्रतिबिंब स्त्री जीवन का अध्ययन” है। प्रस्तुत शोध प्रबंध 6 अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय-“जितेन्द्र श्रीवास्तव का व्यक्तित्व और कृतित्व”। कवि जितेन्द्र का व्यक्तित्व बहु आयामी व्यक्तित्व है। वह एक बेहतरीन प्रोफेसर, अच्छे कवि, आलोचक, संपादक और कहानीकार इत्यादि कई रूपों में उन्होंने सफलता अर्जित की हैं। इन सब रूपों के योग से निर्मित जितेन्द्र का व्यक्तित्व एक संयुक्त व्यक्तित्व है। समकालीन हिंदी साहित्य में इन्हें कवि के रूप में सबसे ज्यादा सफलता मिली है। उनके साहित्य में सामान्य जनजीवन का यथार्थचित्रण प्राप्त होता है। वे अपने विचार तथा दायित्व से प्रतिबद्ध साहित्यकार हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव के जीवन का आरंभिक हिस्सा लगभग 14-15 वर्षों का जब एक तरफ से चेतना का निर्माण होता है वह समय उन्होंने ठेठ गांव में गुजरा, लोगों के बीच गुजरा, प्रकृति के बीच गुजरा। इन सब का उनकी चेतना पर बहुत गहरा असर पड़ा है और वह आज तक है। कवि सबसे पहले अपने जीवन से ही सिखाता है। कवि जिस परिवेश से आए हैं वहां उनकी मां थी, नानी थी, उनकी बड़ी बहनें थी और इन सब के सानिध्य में वे बड़े हुए। कवि ने उनके सुख देखें, उनके दुख देखे, उनका संघर्ष देखा, उनकी जीवंता देखी, ईमानदारी देखी। कवि के विवाह के बाद उनके जीवन में उनकी पत्नी आई, दो बेटी आई। मां, नानी, बहनें, पत्नी और बेटियों के साथ रहते हुए और अपने आसपास के स्त्री जीवन को देखते हुए उन्होंने महसूस किया कि स्त्रियां मूल रूप से बहुत ईमानदार होती हैं। बहुत संघर्षशील होती हैं। जीवन्ता होता है उनमें। वे जल्दी हार नहीं मानती। कई बार पुरुषों को उनकी मुश्किलों से निजात वही दिलाती है। मुक्ति वही दिलाती है। कवि के जीवन और व्यक्तित्व के निर्माण में स्त्रियों का बड़ा योगदान रहा है। शायद यही कारण

है कि कवि स्त्रियों के सुख और दुख को वाणी दे सके। कवि के पहचान के साथ जुड़ी कविता जिसका बार-बार जिक्र आता है- 'सोनचिरई' जैसी कविता वह लिखी इसीलिए पाए की स्त्री जीवन को उन्होंने बहुत ही करीब से देखा और महसूस किया है। कवि की बेटियों पर जो कविताएं हैं वह स्त्री जीवन का एक तरह से विस्तार है। बेटियों पर लिखी कविताओं को अगर देखे तो स्त्री विमर्श का एक नया स्वर वहां से निकलता है। अगर स्त्री विमर्श और स्त्रियों को जानना है तो सबसे पहले बेटियों को जानना जरूरी है। क्योंकि बेटियों को लेकर सब लोग बहुत संवेदनशील होते हैं। बेटियों की तरह स्त्री के प्रति संवेदनशील होकर ही हम स्त्री को और उनकी समस्याओं को अच्छे से जान सकेंगे।

इन्होंने सदा माना है कि इनके मस्तिष्क में प्राथमिक चेतना का सूत्रपात परिवार के ही माध्यम से हुआ है। पारिवारिक वातावरण इनकी लिखने के लिए सर्वदा ही सहायक रहा है। कवि के साहित्य सृजन के केंद्र में कविता एवं आलोचना रही है। उन्होंने उत्तर आधुनिकता, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, विज्ञानयुग के इस माहौल में साहित्य और परिस्थितियों के मध्य समन्वय बनाते हुए आज के समाज को दर्पण दिखाया है। देश और समाज में साहित्य के प्रति एक नया नजरिया विकसित किया है। उनकी रचनाएं कल्पना मात्र नहीं है बल्कि समाज के यथार्थ के धरातल पर साधारण विषयों को भी असाधारण के रूप में प्रस्तुत करती है। किसी भी युग की परिस्थितियों को रचनात्मक रूप प्रदान करने में उसे देश विशेष के व्यक्तियों एवं समाज की भागीदारी अनिवार्य है। कवि भी समाज का ही हिस्सा होता है और इस दिशा में अपनी युगीन परिस्थितियों को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य अपनी रचनाओं के द्वारा करता है। रचना का महत्व भी तभी स्थापित होता है। जब उसके संदर्भ युग अनुकूल हो। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव का रचना संसार युग के विभिन्न संदर्भों को अपने साथ लिए चलता है। उनकी रचनाओं में लोक जीवन के विविध पक्ष मौजूद हैं जैसे कि स्त्री जीवन, किसान जीवन, मजदूर जीवन, निम्न मध्यम वर्गीय जीवन, दलित जीवन, गांव और शहर

का जनजीवन, उत्तर आधुनिकता, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, उदारीकरण, पूंजीवाद आदि।

द्वितीय अध्याय- “समकालीन स्त्री विमर्श के विभिन्न पक्ष।” इस अध्याय में मैंने जितेंद्र श्रीवास्तव की कविताओं में अभिव्यक्त स्त्री जीवन के अन्य पक्ष जैसे बेटी, पत्नी, मां, बहन, दादी, नानी आदि पक्षों का सूक्ष्म अध्ययन करके पारिवारिक जीवन में उनके महत्व को उजागर किया है। द्वितीय अध्याय को मैंने चार विभागों में विभक्त किया है। 1. समकालीन स्त्री विमर्श के विविध आयाम 2. स्त्री विमर्श का भारतीय पक्ष। इसके अंतर्गत विमर्श कोश गत अर्थ, विमर्श का पारिभाषिक अर्थ, स्त्री विमर्श: अर्थ, स्त्री विमर्श का इतिहास, भारतीय पक्ष में स्त्री विमर्श का इतिहास, प्रागैतिहासिक काल में स्त्री की स्थिति, वैदिक काल में स्त्री की स्थिति, उपनिषद् काल में स्त्री की स्थिति, रामायण एवं महाभारत काल में स्त्री की स्थिति, मध्य युग में भारतीय नारी की स्थिति, आधुनिक युग में नारी की स्थिति, 3. स्त्री विमर्श का पाश्चात्य पक्ष 4. हिंदी साहित्य लेखन में स्त्री विमर्श की दशा एवं दिशा।

समकालीन स्त्री विमर्श के विविध आयाम के अंतर्गत मैंने शिक्षा के प्रचार के कारण समकालीन समय में स्त्री की स्थिति में आए परिवर्तन की बात की है। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में नारी ने अपना स्थान बना लिया है। शिक्षा के सभी क्षेत्र में, सभी परीक्षाओं में स्त्रियां आगे हैं। आज की स्त्री आईएएस, आईपीएस, आईआईटी, चिकित्सा, राजनीति, प्रबंध सभी क्षेत्रों में नारी पुरुषों से भी आगे है। नारी का नौकरी में होना आज एक सामान्य बात है। कुछ वर्ष पहले यह एक बहुत बड़ी बात थी। समाज के उज्ज्वल भविष्य की कामना के लिए हमें स्त्री के प्रति अपना नजरिया एवं व्यापार सब बदलने होंगे। उसे भी मान-सम्मान, स्नेह, शिक्षा, अपनेपन की आवश्यकता है, वह समाज का अभिन्न हिस्सा है। उसमें भी अपार सामर्थ्य और संभावनाएं हैं। जिससे समाज का विकास ही होगा। हमें सकारात्मक सोच को अपनाते हुए उसके अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। आज का युग

नारी स्वतंत्रता का युग है। आज स्त्रियां सभी क्षेत्रों में नई-नई उपलब्धियां अर्जित कर रही हैं। भारत में पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभादेवी पाटिल, पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, लोकसभा की पहली महिला स्पीकर मीरा कुमार, अंतरिक्ष तक पहुंचने वाली कल्पना चावला अनेक उदाहरण यह दर्शाते हैं कि स्त्रियों को न केवल अपनी ताकत का एहसास हो गया है। परन्तु समाज के अन्य वर्ग भी इस ताकत का लोहा मानने लगे हैं। आज शिक्षा के कारण नारी में जागरूकता आई है और अन्य क्षेत्र में उसका सम्मान बढ़ा है। आज भारत में नारी शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं है। किंतु आशा जनक अवश्य है। सरकार और समाज के प्रयत्नों से नारी शिक्षा का विकास करके उसकी क्षमताओं को विकसित किया जाए तो उज्ज्वल सफलता मिल सकती है।

भारतीय समाज का एक प्राचीन इतिहास रहा है यहां की सभ्यता प्राचीन सभ्यताओं में गिनी जाती है। इतिहास के विभिन्न चरणों में स्त्री की स्थिति में पर्याप्त भिन्नता रही है। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक पहुंचते-पहुंचते स्त्री ने अपने जीवन में उल्लेखनीय पड़ावों को पार किया है। इसका सूक्ष्म विश्लेषण मैंने प्रस्तुत अध्याय में किया है। आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति के लिए क्रांतिकारी युग कहा जा सकता है। आधुनिक युग की शुरुआत १९वीं शताब्दी के आरंभ से स्वीकार किया जा सकता है। देश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में व्यापक बदलाव के साथ ही स्त्रियों की दशा में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश हुकूमत ने भारत की प्रजातंत्रवादी व्यवस्था तथा आर्थिक व्यवस्था को पूरी तरह से तोड़ दिया था। लेकिन अंग्रेजी साहित्य और पाश्चात्य विचार धाराओं का सकारात्मक प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ रहा था। पाश्चात्य प्रभाव के कारण कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़ियों के बंधन टूटे और स्त्रियों की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ। ईसाई मिशनरियों ने भारतीय स्त्री जीवन में व्याप्त कुरीतियों की ओर भारतीय समाज सुधारकों का ध्यान केंद्रित किया था।

निष्कर्षतः भारतीय समाज सुधारकों में राजा राममोहन राय से प्रारंभ होकर स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले, महात्मा गांधी के अतिरिक्त गोविंद रानाडे, एनी बेसेंट और बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर आदि ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को जन आंदोलन का विषय बिंदु बनाकर उनका उन्मूलन किया, जिससे स्त्री-सशक्तिकरण की भावना को बल मिला और आगे चलकर इसी से स्त्री मुक्ति आंदोलन का जन्म हुआ।

नारी विमर्श की अवधारणा को पूर्णरूप समझने के लिए इससे संबंधित पश्चिम की विचारधाराओं और उसके इतिहास को भी समझना बहुत जरूरी है। अपने देश की स्त्री की तरह पाश्चात्य स्त्री भी स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों से वंचित रही थी तथा पुरुषों के अधीन रहने को मजबूर थी। उन संपन्न देशों में भी उसकी स्थिति दोगम दर्जे के नागरिक के रूप में ही थी। पश्चिम की सामाजिक व्यवस्था में स्त्री को केवल विवाह और संतान उत्पत्ति का अधिकार था। वह भी पूर्णरूप से दासी थी। आज की स्त्री की तरह वह सार्वजनिक कार्यों में भाग नहीं ले सकती थी और न ही उसे मतदान देने का अधिकार प्राप्त था। किन्तु फ्रांस की राज्यक्रांति और इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति ने स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन किया था। पश्चिम की स्त्रियां जो आज स्वतंत्र जीवन जी रही हैं, इसके लिए उन्हें एक समय कई प्रकार के संघर्ष करने पड़े थे। उन्होंने अपनी स्थिति सुधारने हेतु अनेक आंदोलन चलाए थे। मताधिकार प्राप्त करने की सफलता के बाद धीरे-धीरे अन्य अधिकार भी सुलभ होते गए और स्त्रियां राजनीति के क्षेत्र में भी बेधड़क उतरी थी। इस संदर्भ में सिमोन द बोउआर के विचार हैं- 'अंत में 'संयुक्त राष्ट्र संघ' ने 1945 तक आते-आते दुनिया की सारी स्त्रियों तथा पुरुषों के लिए समान अधिकार का ऐलान किया था। अधिकतर देशों में स्त्रियों को मताधिकार देखकर राजनीतिक जीवन में उनको प्रवेश अधिकार दिया। इस तरह से अपने अधिकारों के प्रति जन सामान्य में चेतना प्रसार कराने के लिए ऐसी अनेक स्त्रियां आगे आयीं। जिन्होंने

साहित्य के माध्यम से कई आंदोलन को गति प्रदान की और अंतः स्त्रियों के लिए गरिमा युक्त परिस्थितियों बनी

आधुनिक युग के हिंदी साहित्य में विशेषरूप से नई कविता एवं समकालीन कविता तक आते-आते स्त्री विमर्श की अपनी एक अलग पहचान बन गई है। आज के साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा अपने जीवन में घटित यथार्थ को बड़ी ही सहजरूप से अभिव्यक्त कर रहे हैं। महादेवी वर्मा, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, मेहरुन्निसा परवेज, जितेन्द्र श्रीवास्तव, अनामिका, अनुराधा सिंह आदि सभी ने अपने जीवन एवं समाज के संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। परन्तु सत्य तो यह है कि यदि स्त्री का दर्द अनुभव करना है या फिर जानना है तो आपको उस जिंदगी को स्वयं जीना पड़ेगा। यदि ऐसा नहीं करते तो वे हकीकत न होकर केवल लोगों के मनोरंजन का साधन बनकर रह जाएगा।

तृतीय अध्याय-“जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं का लोक पक्ष और स्त्री जीवन।”

इस अध्याय में मैंने जितेन्द्र श्रीवास्तव की लोक जीवन और स्त्री जीवन से संबंधित कविताओं अध्ययन किया है। भारतीय लोक साहित्य के निर्माण में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का योगदान अधिक और विशिष्ट रहा है। लोकगीतों की अधिकांश रचनाकार महिलाएं ही हैं। ऐसी महिलाएं जो सदियों से समाज की मुख्यधारा से कटी रही हैं, पठन-पाठन से वंचित रही। जितेन्द्र श्रीवास्तव के लोकगीतों में लोग जीवन का संपूर्ण जीवन भी चित्रित है। बालिका के प्रथम क्रंदन से लेकर जीवन के अंतिम संस्कार तक के भावचित्र लोकगीतों में मिलते हैं। भाई से मिलने को व्याकुल बहन की व्यथा कथा, स्त्रियों का आभूषण प्रेम, सास, ननंद और सौतन के अत्याचारों से पीड़ित स्त्री की मनोदशा, कृषक परिवार की विपन्नता, वीरों की शौर्य कथा, मिलन और विरह के रंगारंग भाव इन लोकगीतों में मिलते हैं। इन लोकगीतों में स्त्रियों की अपनी भावनाएं, परंपराओं के प्रति क्षोभ, पितृसत्तात्मक जकड़न की छटपटाह और अपने निजी जीवन के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, वेदना

विरह, मिलन की जीवंत अभिव्यक्तियां दिखाई देती हैं। कहीं यह बेटी के जन्म पर विषाद पूर्ण वातावरण को व्यक्त करता है, कहीं बेटे की अपेक्षा बेटी से भेदभाव पूर्ण व्यवहार के प्रतिरोध में व्यक्त हुआ है। कहीं विवाह के बाद मायका छोड़ने की मजबूरी की करुण विदाई में, तो कहीं पितृगृह जाने के उत्साह एवं उल्लास में तो कहीं सास और ननंद की शिकायतें हैं। लोकगीतों की यह विशेषता है कि उनमें अभिव्यक्तियां सीधी, सरल और यथार्थ होने के कारण अत्यंत मार्मिक हैं तथा सीधे-सीधे हृदय को स्पर्श करने में समर्थ होती हैं। लोकगीतों में बेटी का अपने माता पिता को छोड़ने की मजबूरी है उससे वह दुखी है। अपना घर-परिवार गांव, गलियां सब कुछ सदा के लिए छोड़ती है। यह मोह को छोड़ना आसान नहीं है। नेहर छूटता जा रहा है। लोकगीतों का क्षेत्र बहुत व्यापक और बहुआयामी रहा है। रोजी-रोटी के लिए लोग देश-विदेश भटकते हैं। घर, पत्नी को छोड़कर प्रिय परदेस चला गया है। इस बात की अभिव्यक्ति जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में बड़ी बारीकी से हुई है।

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की स्त्री संबंधित कविताओं में 'लोक का चेहरा' दिखता है। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए आंखों को यह सहज विश्वास नहीं होता कि उनके यहां लोक जीवन और स्त्री जीवन इतने गहरे रूप में तथा सशक्त रूप में उपस्थित हैं। उनको पढ़ते हुए बार-बार कवि केदारनाथ सिंह की याद आती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि जितेन्द्र श्रीवास्तव केदारनाथ सिंह की परंपरा की धारा को आगे बढ़ाने वाले और उसमें बहुत कुछ नया जोड़ने वाले कवि हैं। यदि आप लोक का चेहरा देखना चाहते हैं और उससे मिलना चाहते हैं। उसे पढ़ना चाहते हैं, उसके साथ उसके हाट-बाजार, खेत-खलियान में घूमना चाहते हैं या उसके रसोई का स्वाद चखना चाहते हैं, तो आप जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं को एक बार पढ़ कर देखिए। कवि का लोक अतिसामान्य शब्द और सामान्य चीजों से बना है। जैसे लालटेन, पीढ़ा, छाता, बथुआ साग, सामान्य लोग और सामान्य स्त्रियों से। लेकिन यह सामान्य चीजें कवि के हाथों में आते ही असामान्य

दिखने लगती है और अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगती है। उन स्त्रियों की सारी जिंदगी जांत पर गेहूं पिसते और गीत गाते हुए उस पति के इंतजार में बीत जाती है जो विदेश चला गया है। लोक का विदेश कोई विकसित देश नहीं परंतु हमारे देश का एक शहर है। अपने बच्चों के चेहरों पर मुस्कान देखने के लिए यह लोग अपने मुल्क की मिट्टी-पानी और बोली-बानी, घर गांव, यार, दोस्त, बीवी और बच्चों को छोड़ कर रोजी-रोटी की खोज में मजदूरी करने चले जाते हैं।

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में लोक जीवन के साथ समकालीन स्त्री विमर्श भी अपनी अस्मिता के साथ उपस्थित है। स्त्री पक्ष के बिना लोक पक्ष अधूरा है। स्त्री विमर्श के इस परिवेश में जितेन्द्र श्रीवास्तव की स्त्री संबंधी कविताएं उम्मीद की किरण की तरह दिखती हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में स्त्रियों का बहुआयामी रूप उभर कर हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है। उनकी कविताओं में घास गढ़ती, ट्रेन में भीख मांगती, पहाड़ पर बोझा ढोती घर-परिवार, पति तथा बच्चों को संभालती तथा ऑफिस का काम करती तमाम तरह की औरतें मौजूद हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव स्त्री की पीड़ा, समस्या, तकलीफ और उसके मन की इच्छाओं को जानने के लिए स्त्री की जगह खड़े होकर सोचते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव स्त्री को पुरुष की दृष्टि से नहीं परंतु एक स्त्री की नजर से देखते हैं। लोक जीवन में और स्त्री जीवन में बहुत सारे परिवर्तन आए हैं। जिन्हें कवि जितेन्द्र ने बड़ी ही सूक्ष्मता से अपनी कविताओं में रेखांकित किया है। स्त्री जीवन की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को सजीवता के साथ हमारे सम्मुख रखा है। आज की आधुनिक स्त्री अपने आसपास के वातावरण को समझ रही है। वातावरण में यदि किसी प्रकार की समस्याएं हैं तो उसका विरोध आज की शिक्षित तथा चेतना संपन्न स्त्री कर रही है। कवि जितेन्द्र की कविताओं में लोकजीवन और स्त्री जीवन संयुक्त रूप से एक दूसरे में घुले-मिले हैं। एक के बगैर दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मां, नानी, दादी, पत्नी, बेटियों के जीवन तथा सरोकारों को कवि जितेन्द्र ने सजीवता और गरिमा के साथ अपनी

कविता में चित्रित किया है। समग्र लोक जीवन में व्याप्त स्त्री जीवन को भी कवि ने अस्मिता बोध के साथ सम्मुख रखा है। मानव जीवन की शुरुआत से मानव जीवन के सभ्यता के निरंतर विकास में स्त्री जीवन का अतुलनीय योगदान रहा है। भारतीय लोक में स्त्री के योगदान को भुला देना कवि को किसी भी स्तर पर स्वीकार्य नहीं है।

चतुर्थ अध्याय- “जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में अभिव्यक्त भारतीय दाम्पत्य जीवन।” प्रस्तुत अध्याय में मैंने कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की दाम्पत्य जीवन पर आधारीत कविताओं का अध्ययन करके दाम्पत्य जीवन के महत्व को उजागर किया है। ‘विवाह’ संस्कार को हमारे देश में सात जन्मों का पवित्र बंधन माना गया है। विवाह संस्कार को हमारे देश में जितना महत्व मिला है उतना दुनिया के अन्य किसी भी देश में नहीं देखा गया। ‘विवाह’ संस्कार परिवार जीवन की आधारशिला है। विवाह से दाम्पत्य जीवन का आरंभ और विकास होता है। लड़की जब विवाह करने योग्य हो जाती है तो मां-बाप उसके लिए योग्य वर की खोज करते हैं और योग्य वर मिलने के बाद विवाह कर देते हैं। विवाह के बाद पति-पत्नी को ही दम्पति कहा जाता है। भारतीय समाज में विवाह बंधन को अनिवार्य माना गया है। विवाह के पहले एक स्त्री केवल एक पुत्री और बहन रहती है किन्तु विवाह के बाद उसे अलग-अलग प्रकार की भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं जैसे कि पत्नी, बहू, मां, भाभी, देवरानी, जेठानी, चाची, मामी आदि। इन सब में ‘पत्नी’ की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। वैदिक साहित्य में पत्नी को पति के घर में सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इसका प्रमाण ऋग्वेद का यह कथन है- ‘पत्नी ही घर है’ कुदरत ने नारी को पुरुष के पूरक रूप में बनाया है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अपूर्ण तथा अधूरा ही रहता है। विवाह इसी प्राकृतिक विधान का सामाजिक एक संस्कार है। पत्नी बनकर नारी पुरुष की अर्धांगिनी बनती है और अपने दाम्पत्य जीवन की सार्थकता पाती है। पति-पत्नी दोनों के आपसी सहयोग से दाम्पत्य जीवन का संचालन होता है। पति-पत्नी के अच्छे और बुरे व्यवहारिक संबंधों पर सफल और

असफल दाम्पत्य जीवन का आधार रहता है। भारतीय समाज में स्त्री को धर्मपत्नी तथा अर्धांगिनी की संज्ञा दी गई है जिसका अर्थ है पुरुष का आधा भाग उसकी पत्नी है। अर्थात् बिना विवाह के स्त्री-पुरुष का व्यक्तित्व अधूरा रहता है। विवाह के बाद ही एक पुरुष और एक स्त्री का व्यक्तित्व पूर्ण बनता है। रामायण ग्रंथ में पत्नी को पति की 'आत्मा' माना गया है। महाभारत ग्रंथ के अनुसार वह पति का 'आधा' भाग है, वह पति का उत्तम मित्र है। इससे पता चलता है कि दाम्पत्य ही परिवार का मुख्य हेतु है। नारी और पुरुष के परस्पर आकर्षण ने सहचर्य की भावना को जन्म दिया और समाज में इसी सहचर्य को विवाह के रूप में स्थापित किया। भारतीय परिवार में दाम्पत्य संबंध को जितना महत्व दिया गया है उतना अन्य किसी संबंध को नहीं दिया गया। भगवान शिव की अर्धनारीश्वर की प्रतिमा यही साबित करती है कि स्त्री के बिना पुरुष और पुरुष के बिना स्त्री अधूरी है, अपूर्ण है। पति और पत्नी दाम्पत्य जीवन के अभिन्न अंग हैं। पति के बिना पत्नी अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति आधा-अधूरा है। वैदिक युग में दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का बड़ा ही महत्व था, महाभारत में भी यही क्रम है। इन सब बातों पर दंपतियों की आस्था थी तथा वे सुख पूर्वक दाम्पत्य जीवन का निर्वाहन करते थे, एक दूसरे का रक्षण करना और पोषण करते रहना तथा परस्पर सुख की कामना करते रहते थे। भारतीय जीवन मूल्यों ने दाम्पत्य जीवन को सुरक्षित रखने का अच्छा प्रयास किया है किंतु आधुनिक युग में जहां जीवन मूल्यों में विघटन हो रहा है वही दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन होना एक स्वाभाविक बात है। वर्तमान युग में सफल दाम्पत्य जीवन की अपेक्षा समाज में असफल दाम्पत्य जीवन के चित्र अधिक देखने को मिलते हैं। जैसे कि मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' तथा मन्नू भण्डारी जी का 'आपका बंटी' इसका जीता जागता उदाहरण है। हमारे समाज में आज दाम्पत्य जीवन अपनी परंपरागत विचारधारा के साथ अपनी पवित्रता बनाए हुए हैं। भारतीय पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति समर्पित हैं। किन्तु कहीं कहीं पर आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता के कारण पति-पत्नी अपने

दाम्पत्य जीवन से उब रहे हैं। आज की शिक्षित पत्नियां आंख मूंदकर पति की प्रत्यक्ष आज्ञा का पालन करने को तैयार नहीं हैं। वे पति की सहचारी तथा मित्र बनना चाहती हैं। अब उन्हें घर की चार दीवारी में बंद नहीं रखा जा सकता। भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों को आधुनिकता की चुनौती ने इतना बदल दिया है कि दाम्पत्य संबंधों में काफी परिवर्तन आ गया है। यह बदलते हुए परिवेश का ही परिणाम है।

‘बिल्कुल तुम्हारी तरह’ और ‘जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर’ यह कविता संग्रह जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी जीवनसंगिनी श्रीमती श्यामली जी को समर्पित किया है। इस काव्य संग्रह में जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपने २२ साल के अधिक सुखमय दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया है। जो कि एक आदर्श भारतीय दाम्पत्य जीवन को निरूपित करता है। इस काव्य संग्रह में कवि ने अपनी पत्नी प्रेम को बखूबी अभिव्यक्त किया है। पत्नी से पहली बार मिलना, विवाह के बाद व्यवसाय कार्य के लिए अलग-अलग जगहों पर जाना जैसे कि धारचूला, पिथौरागढ़ और बभनान। ऐसे में पत्नी की यादें और बच्चों की यादों को कवि ने अपनी कविताओं के द्वारा अभिव्यक्त किया है। पत्नी और बच्चों की यादों के सहारे किसी अनजान शहर में जीवन व्यतीत करना आसान नहीं है। ‘बिल्कुल तुम्हारी तरह’ काव्य संग्रह जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रेम कविताओं में शब्द अर्थ में पिघल जाता है और अर्थ शब्द का रूपाकार ग्रहण कर लेता है। उनकी कविता जिस ताकत से अपनी जगह बनाने में सफल है। उसका उत्स उसकी प्रेम संवेदना में है। दैहिक और निजी संदर्भों के स्तर पर पक कर यह प्रेम उनकी कविताओं में एक नई व्याप्ति प्राप्त करता है। प्रेम की व्याप्ति जितेन्द्र की कविताओं में न केवल स्त्री की आंतरिक दुनिया की वेदना तक फैली हुई है किन्तु इसकी जर्द में वह सारा समय और समाज दाखिल होता है जो किसी ना किसी रूप में कवि के निजी अनुभव का हिस्सा रह चुका है। यहां कवि खुलकर स्वीकार करता है कि वह प्रेम ही है जिसने उसे और उसकी संवेदना को अधिक मानवीय, भावाकुल और निडर बनाया है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रेम कविताएं दाम्पत्य से प्रेम, वायु और धूप ग्रहण करती हैं। यहां लालसा से नहीं परन्तु यह साहचर्य से जन्मा प्रेम है। छोटी-छोटी स्मृतिओं के जरिए बुनी गई इन कविताओं की गहराई पाठकों से अलक्षित नहीं रह पाएगी। दाम्पत्य जीवन के प्रति गहरी आस्था से उपजी कविताएं हैं। इन कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम, दुनिया से कटकर सार्थकता नहीं पाना चाहता। वह इसी जीवन के सुख-दुख का हिस्सा है। एक ऐसे समय में जब विद्रोह के प्रचलित शब्द बेमान होने लगे, संघर्ष के सारे रूपों को आततायी सत्ता की संस्कृति संदेहास्पद बनाने लगे। तब प्रेम कविताओं की जरूरत बढ़ जाती है। कवियों के दायित्व भी बढ़ जाते हैं। यह सुखद है कि जितेन्द्र का कवि सरल निश्चल जीवन की खोज में हर उस जगह जाना चाहता है जहां प्रेम एक आदत की तरह हो। जीवन का सार हो। उनका प्रेम दैहिक दायरे से निकलकर अपने विस्तार में पूरी कायनात को समेट लेने को उत्सुक है। न केवल उत्सुक किन्तु कल्पना की असंभव हदों तक जाकर उस स्वप्न संसार को संभव कर लेना चाहता है। निश्चय ही जितेन्द्र श्रीवास्तव की दाम्पत्य जीवन पर आधारित यह प्रेम कविताएं जीवन को एक नया अर्थ देने वाली कविताएं हैं। आज की आधुनिक नारी भौतिक सुख और संपन्नता नहीं चाहती। एक वह भी समय था जब नारी गुड़िया बनकर पुरुष की पत्नी बन जाना पसंद करती थी। परन्तु आज के आधुनिक नारी केवल गुड़िया नहीं बनना चाहती। आज वह सुख साधन और संपन्नता से अधिक एक पुरुष का भावात्मक और शारीरिक सहचार्य भी चाहती है अर्थात् आज की नारी पति नहीं एक अच्छा जीवन साथी, एक अच्छा दोस्त चाहती है जो उसे समझे, सम्मान दें, प्यार करें और उसकी भावनाओं को समझें।

जितेन्द्र श्रीवास्तव की दाम्पत्य जीवन पर आधारित कविताएं दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के लिए एक औषधि का कार्य करती हैं। जिसे पढ़कर हर एक भारतीय दाम्पत्य जीवन को सही अर्थों में समझ पाएगा। वह समझ पाएगा की पति-पत्नी का संबंध केवल शारीरिक नहीं आत्मिक भी है, दाम्पत्य जीवन में एक

दूसरे को समझना, एक-दूसरे के मन के भाव को समझना, एक दूसरे को मान-सम्मान देना काफी जरूरी है। जितेन्द्र वास्तव ने अपनी कविता में अपनी पत्नी अपने बच्चों को अपने जीवन का 'प्राणवायु' और अपने जीवन की 'उजास' कहा है। दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के अनेक गुण जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में हैं जिसे हर एक शादीशुदा पुरुष और महिला को पढ़ना चाहिए। जिसे पढ़कर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सके।

पंचम अध्याय "जितेन्द्र श्रीवास्तव की बेटी केंद्रित कविताएं और स्त्री विमर्श का नया पक्ष।" इस अध्याय में मैंने जितेन्द्र श्रीवास्तव की बेटी केंद्रित चयनीत काव्य संग्रह का अध्ययन किया है जिसका नाम है 'बेटियां'। समकालिन हिंदी कविता में निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, नागार्जुन और अनामिका आदि ने बेटियों से संबंधित सुंदर कविताएं लिखी हैं। इन कविताओं में कवियों की अग्रगामी चेतना का आभास मिलता है। कवियों ने अपनी चिंता और चेतना को संवेदना के धरातल पर चित्रित किया है। इस संदर्भ में जितेन्द्र की कविताओं का अवलोकन करना उचित होगा। बेटियों के बहाने कवि ने आत्मीयता की तलाश की है। साथ ही, कवि के जीवन अनुभव और समय, समाज के संदर्भ घुल मिलकर व्यापक तथा बहू आयाम रचने में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं। ध्यातव्य है कि बेटियां केवल बेटियां नहीं हैं, यहां कवि की जीवनदायिनी शक्तियों के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित होती हैं। ठीक इसी तरह पिता महज एक शब्द नहीं है। बिचारा नहीं है, ब्रह्मा है।

हिंदी कविता के 1000 वर्ष के इतिहास में जितेन्द्र श्रीवास्तव पहले कवि हैं। जिन्होंने बेटियों को ध्यान में रखकर पिछले 23 वर्षों में 23 कविताएं लिखी हैं। इतनी संख्या में और काल विस्तार में हिंदी के किसी भी दूसरे कवि की कविताएं बेटियों पर नहीं मिलती हैं। हिंदी कविता में स्त्री के बेटी रूप को अब तक विषय की व्यापकता तथा विविधता नहीं प्राप्त हुई थी। जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपने कवि जीवन के शुरुआती दिनों से लेकर आज तक निरंतर इस विषय पर कविताएं

लिखी है। 1995 से लेकर 2018 के बीच 23 वर्षों में लिखी गई ये 23 कविताएं अपने भीतर पर्याप्त काल विस्तार को भी समेटती हैं। ये कविताएं किसी एक झटके में नहीं लिखी गई हैं। बल्कि आस्ते-आस्ते परिपक्व होती हुई पाठकों के सामने आई हैं। इन कविताओं की एक विशेषता ध्यान आकर्षित करती है कि इनमें कवि की अपनी बेटियों का जिक्र तो है साथ में इनमें बेटों के प्रति सामान्य भाव बोध को भी पूरी संवेदना के साथ चित्रित किया गया है। उनकी कविताओं में बेटों की चिंता-चर्चा व्यक्तिगत तथा पारिवारिकता से लेकर वैश्विकस्तर पर स्त्री के लिए की जा रही बहस से भी जुड़ती है। जितेन्द्र श्रीवास्तव की बेटियों से संबंधित कविताएं हिंदी कविता की एक बड़े अभाव को दूर करती हैं। उन्होंने योजना बनाकर बेटों केंद्रित कविताएं नहीं लिखी हैं। बल्कि उनके द्वारा लिखी गई कविताओं में यह भाव बोध पारिवारिक संवेदना के साथ घुल मिलकर व्यक्त हुआ है। उनकी ऐसी कई कविताएं हैं जिनका संदर्भ स्त्री है, मगर उस स्त्री का बुनियादी रूप उस कविता में बेटों का है। स्त्री विमर्श के कई पक्ष हैं। जिनमें से एक पक्ष बेटियों का भी है। इस पर साहित्य की दुनिया में चर्चा कम होती है। यह कहा जा सकता है कि बेटों का पक्ष, स्त्री का ही पक्ष है, इसीलिए स्त्री की चिंता में ही बेटों की चिंता को भी शामिल मान लेना चाहिए। मगर एक बात का खयाल रखना चाहिए कि स्त्री की तुलना में बेटों के प्रति संवेदनात्मक गहराई ज्यादा होती है। स्त्री की चिंता करनेवाली भाषा में बेटों की चिंता करती हुई कविता ज्यादा मर्मस्पर्शी होती है। जितेन्द्र श्रीवास्तव की बेटों केंद्रित कविताएं संभव हैं कि हिंदी कविता में स्त्री विमर्श के एक नए पक्ष को विस्तार देगा

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताएं स्त्री विमर्श के लिए एक नए द्वार का उद्घाटन करती हैं। बेटों के लिए रची गई काव्य भाषा में संवेदना का एक नया तथा गहरारूप हमारे सामने आता है। बेटों केंद्रित इन कविताओं में स्त्री के प्रति आत्मीय और निश्छल भाषा का जो प्रयोग हुआ है। उसकी बुनियाद मनुष्यता की जमीन पर तैयार की गई है। यदि हिंदी कविता में बेटों को विषय के रूप में सच्चे मन

से अपनाया जाए तो पूरी संभावना है कि स्त्री विमर्श की सर्वाधिक आत्मीय और मानवीय भाषा हमारे सामने होगी। इस भाषा को पुरुष भी रच पाएगा और स्त्री भी। आशा की जा सकती है कि जितेन्द्र श्रीवास्तव की ऐसी कविताएं लंबे समय तक अच्छी कविताओं के रूप में याद की जाती रहेगी। जैसे निराला और अनामिका की 'बेटी' केंद्रीय कविताएं याद की जाती हैं।

षष्ठ अध्याय "जितेन्द्र श्रीवास्तव की स्त्री विषय कविताओं की भाषा और उसका शिल्प।" प्रस्तुत अध्याय में मैंने कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के स्त्री संबंधित काव्य को पढ़कर उसकी भाषा तथा उसके शिल्प का अध्ययन किया है। हिन्दी साहित्य में आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल में साहित्यकारों अपने-अपने परिवेश के अनुसार अपनी-अपनी भाषा में कविताओं का सृजन किया है। जैसे आदिकाल में काव्य की भाषा डिंगल और पिंगल रही। मध्यकाल में काव्य की भाषा ब्रज और अवधी रही। उसी प्रकार आधुनिक काल में काव्य की भाषा खड़ी बोली हिंदी रही है। आज आधुनिक काल में साहित्य के अनेक कवि अपनी बात को सहज और सरल भाषा में ही कहना उचित मानते हैं। क्योंकि उसमें स्वाभाविक अभिव्यक्ति हो सकती है। जितेन्द्र श्रीवास्तव एक ऐसे कवि हैं जो अपनी कविताओं में सहज और सरल भाषा का उपयोग करते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव गोरखपुर के रहने वाले हैं इस कारण उन्होंने भोजपुरी में भी साहित्य का सृजन किया है और हिंदी में भी। एक कवि के लिए कविता में सहज और सरल का उपयोग नितांत आवश्यक है क्योंकि उसी भाषा में वह अपने भावों को और आम जनता के भावों को सहजता से अभिव्यक्त कर सकता है। ऐसा कवि को जो गरीब किसान, मजदूर और निम्न मध्यमवर्गीय जनसमूह तथा स्त्री की पीड़ा को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखता है, एक स्वस्थ मानवीय जीवन जीने के उनके उत्साह को सशक्त रूप में व्यक्त करता है। उन्हें शोषित-पीड़ित रखने वाली व्यवस्था के असली स्वरूप को उनके सामने नग्न करता है, उनके भ्रमों को तोड़कर तथा उनके साहस को जगाकर उन्हें सामूहिक संघर्ष में जुट जाने के लिए तैयार करता है, इस दृष्टि से

जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविताओं के माध्यम से एक जनवादी कवि सिद्ध होते हैं।

समकालीन कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के स्त्री जीवन से संबंधित कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं जैसे कि अनभै-कथा, असुंदर-सुंदर, बिल्कुल तुम्हारी तरह, जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर, स्त्रीयां कहीं भी बचा लेती है पुरुषों को, और बेटियां जैसे काव्य संग्रह में कवि ने स्त्री जीवन से संबंधित कविताएं लिखी है। जिसमें निम्नवर्गीय और मेहनतकश स्त्रियों की पीड़ा, शोषण को खुद महसूस कर वाणी प्रदान की है। जितेन्द्र श्रीवास्तव स्त्री को पुरुष की नजर से नहीं बल्कि स्त्री की नजर से देखते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव अपने बचपन में अपनी मां, नानी और बहनों के साथ रहे उन्होंने उनकी पीड़ा देखी, उनकी समस्या देखी तथा अपनी युवावस्था में अपने आसपास के माहौल में मेहनतकश स्त्रियां के दुख-दर्द को देखा और उन्होंने पाया कि स्त्रियां मूल रूप से बहुत इमानदार और मेहनतकश होती है और जीवटता रहती है उनमें। परिस्थिति जीवन में कितनी भी विषम क्यों ना हो। लेकिन स्त्रियां कभी हार नहीं मानती। कवि स्त्री संबंधित कविताओं में स्त्रियों की पीड़ा को स्त्री की जगह खड़े होकर, स्त्री की वाणी में अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं। स्त्री के एक पक्ष बेटे पक्ष पर भी जितेन्द्र श्रीवास्तव ने कविताओं की रचना की है। बेटियों पर आधारित कविता में कवि ने भावपूर्ण भाषा का उपयोग किया है। कवि ने अपने संग्रह में अपनी अभिव्यक्ति को भावपूर्ण भाषा में कथात्मकरूप से अभिव्यक्त किया है। जिसमें मानवीय और निश्छल भाषा की ताजगी देखी जा सकती है। वात्सल्य रस से परिपूर्ण यह कविताएं पढ़ने के बाद हम बेटियों की दुनिया में खो जाते हैं।

जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपने स्त्री संबंधित काव्य के अंतर्गत जिस भाषा और शिल्प की योजना की है वह प्रभावि हैं। कवि की भाषा स्त्री के दुख-दर्द को अच्छे से व्यक्त करती है। उनकी भाषा भावात्मक एवं कथात्मक हैं। उनके काव्य में स्त्री के प्रति आदरणीय और मानवीय भाषा का उपयोग हुआ है। बेटियों से संबंधित

जितेन्द्र की जो कविताएं हैं उसमें वात्सल्य रस काफी प्रभावी है। परंपरागत प्रतीकों और बिंबो के साथ-साथ प्रत्येक वर्ग के नए प्रतीक कवि ने गढ़े हैं। सोनचिरई, रामदुलारी, परवीन बाँबी, पुकार, संजना तिवारी, रमिया जैसी कविताओं के स्त्री पात्र जो न केवल आज के समय में पाठकों की चेतना को सोचने के लिए मजबूर करते हैं किंतु आने वाली पीढ़ियों को भी प्रतीकात्मक रूप से प्रभावित करेंगे। स्त्री विमर्श की क्रांति को पल्लवित करने वाली उनकी कविताएं स्त्री विमर्श की क्रांति को आगे भी समृद्ध करती रहेगी।